SPECIAL ISSUE
January 2020

VIDYAWARTA®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

स्वयं वित्त पोषित,
एक दिवसिय राष्ट्रीय संगोष्ठी तिथि ४ जनवरी २०२०

हिंदी साहित्य में कृषक चेतना

संयोजक

हिंदी विभाग

श्री गजानन शिक्षण प्रसारक मंडल, येलदरी कैंम्प द्वारा संचलित, (भाषिक मारवाडी अल्पसंख्यांक संस्था)

तोष्णीवाल कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,

सेनगाव, ता.सेनगांव, जि.हिंगोली

* संलग्न *

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

प्रा.एस.जी.तळणीकर
प्र.प्रधानाचार्य

प्रा.प्रमोद घन	डॉ.शंकर पजई	डॉ.विजय वाघ
संगोष्ठी सचिव	संगोष्ठी संयोजक	संगोष्ठी सह संयोजक

Vyapari Education Society's Degloor College, Degloor Dist.Nanded

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S GLOOR COLLEGE DEGLOOR Dist.Nanded

26) समकालीन हिन्दी कविता में अभिव्यक्त कृषक चेतना
डॉ. संतोष विजय येरावार, देगलूर ||104

27) किसानी समाज हासिए पर 'हलफनामे' के जरिए
डॉ. गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे, जि. लातूर ||108

28) त्रिलोचन के काव्य में किसान चेतना की अभिव्यक्ति
डॉ. शेखर घुंगरवार, नांदेड ||110

29) रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में चित्रित किसान जीवन
प्रा. लुटे मारोती भारतराव, नांदेड ||113

30) समकालीन कविता में व्यक्त कृषक जीवन की त्रासदी
प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण, लातूर ||117

31) आधुनिक उपन्यासों में चित्रित किसान की दशा और दिशा
डॉ. शे. रज़िया शहेनाज शे. अब्दुल्ला, बसमतनगर ||121

32) हिंदी उपन्यासों में कृषक चेतना
प्रा.डॉ. हाके एम. आर., जि. परभणी ||124

33) प्रेमचंद : कृषक जीवन कल और आज
डॉ. हणमंत पवार, किल्लारी ||126

34) डॉ. नीरजा माधव के "देनपा तिब्बत की डायरी" उपन्यास में व्यक्त कृषक चेतना ...
प्रा. सोनकाम्बले पद्मानंद पिराजीराव, नांदेड ||132

35) हिंदी की कविता में चित्रित कृषक जीवन
डॉ. अविनाश कासांडे, जि. बीड ||135

36) भारतीय किसान जिवन की त्रासदी (हिंदी उपन्यासों के परिप्रेक्ष में)
प्रा. भेंडेकर एन. एस., गंगाखेड ||137

37) पूस की रात कहानी के बहाने किसान विमर्श
डॉ बालाजी श्रीपती भुरे, जि. लातूर ||141

38) हिंदी काव्य और कृषक जीवन : एक अनुशीलन
प्रा. डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी, लातूर ||144

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

मुंशी जी घी का पीपा उठाकर सीधा मित्तल साहब की कोठी पर पहुँचा देना। कल शाम कही क्लब में मिले थे। घी के बारे में पूछ रहे थे।

उपन्यास हर पात्र बदले की भावना को अगले पीढी को धरोहर के रुप में सोंपकर निश्चित हो जाना चाहता है। और अपनी संपत्ती साहुकार, अदालत, थाना, अस्पताल के चरनों में लूटा देते हैं। इस उपन्यास में कृषक जीवन स्त्री समस्या को लेकर यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

संदर्भ संकेत

१) जगदीशचंद्र–कभी न छोडे खेत–पृ.क्र १६६

❑❑❑

26

समकालीन हिन्दी कविता में अभिव्यक्त कृषक चेतना

डॉ. संतोष विजय येरावार
हिंदी विभाग प्रमुख,
देगलूर महाविद्यालय देगलूर

समकालीन कविता में किसान समस्याओको प्रखरतासे अभिव्यक्त किया गया है। किसानों की दयनीय अवस्था, संघर्षरत जीवन, अनिश्चितता, गरिबी बेराजगारी, भुखमरी, अतीवर्षा एवं अकाल से प्रभावित फसले और किसानों का जीवन, फसलों को मिलने वाला कम दाम, कर्ज, परिवारिक कलह, समाज में किसानों को मिलनेवाला, अनादर, आत्महत्या, फसल पैदावार की अनिश्चितता, जमींदार एवं सहूकार द्वारा होनेवाला आर्थिक शोषण, सामाजिक एवं धार्मिक विकृतियों से प्रभावग्रस्त मानसिकता, अशिक्षा के कारण पणपी अंधश्रद्धा प्रशासकीय अधिकारी एवं जनप्रतीनिधीद्वारा होनेवाला शोषण, सरकारी योजनाओं की असफलता, लालफिताही एवं भ्रष्टाचार, आदि अनेको समस्याओं से भरा किसानों का जीवन है। किसानों के जीवन से जुडी समस्याओं को वाणी प्रदान करने का कार्य समकालीन कविता ने कियाहै किसानो के जीवन की सामाजिक, धार्मिक, परिवारीक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितीयों में व्याप्त विसंगती, विकृती एवं विडंबनाओं को कविता में अभिव्यक्त किया गया हैं।

किसान निरंतर कडी मेहनत करता है। विभिंन कठिन परिस्थिती का सामना करता हैं ता की समाज में कोई भुखा न सो सके किंतु विडंबना देखीए जनमानस का भुख मिटाने वाला किसान अपने पेटकी भुख मिटाने के लिए संघर्षरत हैं। किसानो का संपूर्ण जीवन अभाव, दुख, पीडा और समस्याओंसे भरा हैं। किसानो

की बढती आत्महत्या उनके जीवन में बढती समस्याओं के हल न होने का परिनाम है। वर्तमान परिवेशमे तो किसांन और भी दुर्लक्षित हो गया है। भैतिक साधनों के चकाचौंध, और वैश्वीकरण से पनपी कुरता ने मानव को हिंस, स्वार्थी एवं पतित बना दिया है जिस कारण तथाकथित सफेदपोश वर्ग किसानों को घृणा और तिरस्कार की दृष्टि से देख रहा है। भारत में किसानो की दयनीय अवस्था को नागार्जुन ने उघाडा है।

'पैदा हुआ था मैं
दिन– हीन अपठित कृषक कुल में
आ रहा हूँ पीता अभाव का
आसव ठेठ बचपन से कवि? मै रूपक
हैदबी हुई दुब का
हरा हुआ नहीं कि चरने को दौडते
जीवन गुजरता प्रतिपल संघर्ष में।''

किसानो का जीवन संघर्ष और शोषण से भरा है। कृषक परिवार का जिसका संपूर्ण जीवन अभावग्रस्त होता है। न पेटभर खाने को रोटी, न रहने के लिए छप्पर, न शिक्षा और नही अरोग्य की कोई सुविधा। संपूर्ण जीवन समस्यावो का पुलिंदा होता है। अन्न पैदा करने वाला तो ईश्वर के समान होता हैं जो पालनहार होता है। परंतू पालनहार और अन्ननिर्माता किसान ही वेदना से आहत हैं। भारतीय व्यवस्था ने किसानो का जीवन दूभ्वार बना दिया है। किसानो की दुर्दशा को **'रामधाधारी सिंह दिनकर'** ने भी उघाडा है। दुसरो की भूख मिटानेवाला किसान खुद व्यवस्था का शिकार हो भुखा रहने को मजबुर हैं। पशुओं का पालन–पोषन कर बच्चो को दुधपिलाने वाले किसान के बच्चे दुध के तरसने को मजबुर है। हमारी अर्थव्यवस्था कृषी प्रधान होने के बावजूद कृषी पर निर्भर किसान बेहाल है। सरकारी व्यवस्था एवं राजनेता किसानों के साथ कुर खिलवाड करते हैं। अकाल, अतिवृष्टी, बिनमौसम बारिश, फसलों को लगनेवाले किटक, फसलो का गिरता दाम और बीज के बढते दाम के बोंज तले किसान घुट – घुट कर जीने को मजबुर हैं। भुख से बेहाल है, किसानों के परिवार की बदहाली को उघाडती **'रामधारी सिह दिनकर'** की निम्न पंक्तीयाँ

ऋण – शोधन के लिए दूध – घी बेच – बेच धन जोडेंगे
बूंद– बूंद बेचेंगे, अपने लिए नहीं कुछ छोडेंगे
शिशु मचलेंगे, दुध देख, जननी उनको बहलाएगी
मै फाडूंगी, हृदय, लाज से आख नहीं रो पाएगी
सूखी रोटी खायेगा जब कृषक खेत में धरकर हल
तब दूँगी मैं तृप्ति उसे बनकर लोटे का गंगाजल

जन मानस को यह बात समझनी होगी की अगर किसान खुशहाली से जियेगा तभी उसकी भूख का शमन होगा। किसान बारीश, कडी धुप, कडकडाती सर्दि में खेत में पसिना बहाता हैं तब फसल की पैदावार होती हैं। अगर किसान अनाज पैदा नही करेगा तो लोग भुख से बेहाल हो जायेंगे। दुनिया के पालनहार किसान का मान – सन्मान करना और उनकी जरूरत को पुरा करना हमारा कर्तव्य हैं। किसानों के महत्ता का प्रतिपादन करती **'रवि श्रीवास्तव'** की कविता **'मेहनत किसान की'** कुछ पंक्तियाँ –

''जाडे कीमौसम वो, ठंड से लडे,
तब जाकर भरते, देश में फसल के घडे
गर्मी की तेज धूप से, पैर उसका जले,
मेहनत से उनकी देश में, भुखमरी टले''

किसान खेती करना अपना धर्म समझता हैं। धरती उसके लिए उदर – निर्वाह का मात्र साधन नहीं है धरती तो किसान के लिए माता समान हैं। धरती और किसान का संबंध गहरा होता है। किसान मौसम की परवाह न करते हुए कठीण से कठीण परिस्थितियों में भी अपनी धरती को जोतता हैं जिस कारण किसान के सारे–सुख–दुख, आशा – आकांक्षाए, मान –सन्मान, और खुशहाली धरती से जुडी है। किसान अनेक कठिनाईयों को पार करके जब उसके बोए बीज धरती को चीर अंकुरित होकर धाण में परिवर्तित होते है तो उसके परिश्रम एंव संघर्ष आनंद में बदल जाते है। किसान का सारा जीवन धरती पर और फसलपर निर्भर होता हैं। अगर धरती और फसल की हानी होती है तो किसान का संपूर्ण जीवन प्रभावित होता है क्यूँ की किसान पुरी तरह धरतीपर निर्भर होता है। एकतरफ आम आदमी खुशहाली में और अपनी मौजमस्ती में व्यस्त होता हैं तो दुसरी तरफ किसान फसल को बनाने के लिए निरंतर कठिनाईयों का सामना करता है। धुप,

Dist. Nanded

की बढती आत्महत्या उनके जीवन में बढती समस्याओं के हल न होने का परिनाम है। वर्तमान परिवेशमे तो किसांन और भी दुर्लक्षित हो गया है। भैतिक साधनों के चकाचौंध, और वैश्वीकरण से पनपी कुरता ने मानव को हिंस, स्वार्थी एवं पतित बना दिया है जिस कारण तथाकथित सफेदपोश वर्ग किसानों को घृणा और तिरस्कार की दृष्टि से देख रहा है। भारत में किसानो की दयनीय अवस्था को नागार्जुन ने उघाडा है।

'पैदा हुआ था मैं
दिन— हीन अपठित कृषक कुल में
आ रहा हूँ पीता अभाव का
आसव ठेठ बचपन से कवि? मै रूपक
हैदबी हुई दुब का
हरा हुआ नहीं कि चरने को दौडते
जीवन गुजरता प्रतिपल संघर्ष में।''

किसानो का जीवन संघर्ष और शोषण से भरा है। कृषक परिवार का जिसका संपूर्ण जीवन अभावग्रस्त होता हैं। न पेटभर खाने को रोटी, न रहने के लिए छप्पर, न शिक्षा और नही अरोग्य की कोई सुविधा। संपूर्ण जीवन समस्यावो का पुलिंदा होता है। अन्न पैदा करने वाला तो ईश्वर के समान होता हैं जो पालनहार होता है। परंतू पालनहार और अन्ननिर्माता किसान ही वेदना से आहत हैं। भारतीय व्यवस्था ने किसानो का जीवन दूष्वार बना दिया है। किसानो की दुर्दशा को **'रामधाधारी सिंह दिनकर'** ने भी उघाडा है। दुसरो की भूख मिटानेवाला किसान खुद व्यवस्था का शिकार हो भुखा रहने को मजबुर हैं। पशुओं का पालन—पोषन कर बच्चो को दुधपिलाने वाले किसान के बच्चे दुध के तरसने को मजबुर है। हमारी अर्थव्यवस्था कृषी प्रधान होने के बावजूद कृषी पर निर्भर किसान बेहाल है। सरकारी व्यवस्था एवं राजनेता किसानों के साथ कुर खिलवाड करते हैं। अकाल, अतिवृष्टी, बिनमौसम बारिश, फसलों को लगनेवाले किटक, फसलो का गिरता दाम और बीज के बढते दाम के बोंज तले किसान घुट — घुट कर जीने को मजबुर हैं। भुख से बेहाल है, किसानों के परिवार की बदहाली को उघाडती **'रामधारी सिह दिनकर'** की निम्न पंक्तीयाँ

ऋण — शोधन के लिए दूध — घी बेच — बेच धन जोडेंगे
बूंद— बूंद बेचेंगे, अपने लिए नहीं कुछ छोडेंगे
शिशु मचलेंगे, दुध देख, जननी उनको बहलाएगी
मै फाडूंगी, ह्दय, लाज से आख नहीं रो पाएगी
सूखी रोटी खायेगा जब कृषक खेत में धरकर हल
तब दूँगी मैं तृप्ति उसे बनकर लोटे का गंगाजल

जन मानस को यह बात समझनी होगी की अगर किसान खुशहाली से जियेगा तभी उसकी भूख का शमन होगा। किसान बारीश, कडी धुप, कडकडाती सर्दि में खेत में पसिना बहाता है तब फसल की पैदावार होती हैं। अगर किसान अनाज पैदा नही करेगा तो लोग भुख से बेहाल हो जायेंगे। दुनिया के पालनहार किसान का मान — सन्मान करना और उनकी जरूरत को पुरा करना हमारा कर्तव्य हैं। किसानों के महत्ता का प्रतिपादन करती **'रवि श्रीवास्तव'** की कविता **'मेहनत किसान की'** कुछ पंक्तियाँ —

''जाडे कीमौसम वो, ठंड से लडे,
तब जाकर भरते, देश में फसल के घडे
गर्मी की तेज धूप से, पैर उसका जले,
मेहनत से उनकी देश में, भुखमरी टले''

किसान खेती करना अपना धर्म समझता हैं। धरती उसके लिए उदर — निर्वाह का मात्र साधन नहीं है धरती तो किसान के लिए माता समान हैं। धरती और किसान का संबंध गहरा होता है। किसान मौसम की परवाह न करते हुए कठीण से कठीण परिस्थितियों में भी अपनी धरती को जोतता हैं जिस कारण किसान के सारे—सुख—दुख, आशा — आकांक्षाए, मान —सन्मान, और खुशहाली धरती से जुडी है। किसान अनेक कठिनाईयों को पार करके जब उसके बोए बीज धरती को चीर अंकुरित होकर धाण में परिवर्तित होते हैं तो उसके पश्रिम एंव संघर्ष आनंद में बदल जाते है। किसान का सारा जीवन धरती पर और फसलपर निर्भर होता हैं। अगर धरती और फसल की हानी होती हैं तो किसान का संपूर्ण जीवन प्रभावित होता है क्यूँ की किसान पुरी तरह धरतीपर निर्भर होता है। एकतरफ आम आदमी खुशहाली में और अपनी मौजमस्ती में व्यस्त होता हैं तो दुसरी तरफ किसान फसल को बनाने के लिए निरंतर कठिनाईयों का सामना करता हैं। धुप,

बारीश, सर्दी, किसी भी मौसम की पर्वा नही करता और अपना सबकुछ धान के लिए समर्पित कर देता हैं। धरती और किसान का गहरा संबंध है इस भावना को **'केदारनाथ अग्रवाल'** ने **'यह धरती है उस किसान की'** कविता में व्यक्त किया है।

''यह धरती है उस किसान की
जो बैलों के कंधो पर
बरसात धाम में
जुआ भाग्य का रख देता है,
खून चाटती हुई वायू में
पैनी कुसी खेत के भीतर
दूर कलेजे तक ले जाकर
जोत डालता है मिटटी को पॉस डालकर
और बीज फिर बो देता है
नये वर्श के नये फसल के
ढेर अन्न का लग जाता है
यह धरती है उस किसान की।''

किसान और धरती हि सर्वोपरी और सर्वश्रेष्ठ हैं क्यूँ की दोनो जगत के पालनहार है। किसान तो कर्ता हैं जगत का। नायक और सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति किसान है इस भावना को कवी ने अभिव्यक्त किया है।

विडंबना यह है कि जगत का पालनहार, ही समाज के व्यवस्था से लुटा जा रहा हैं। राजनेता, एवं प्रशासकिय अधिकारी किसानो को मिलनेवाली सहायता राशी एवं योजनाओं मे गबन करते है। सरकार से मिलनेवाली आधी धनराशी तो व्यवस्था का तंत्र लूट लेती हैं। व्यापारी खाद, बीज, एंव औषधियाँ महेगे में बेचते हैं और किसानो की आर्थिक लूट करते है। किसान अनाज को बाजार में बेचने के लिए लाता हैं तब भी व्यापारी अनाज में नुख्स निकालकर बाजार से कम दाम में अनाज खरीदकर उनकी आर्थिक लूट करते हैं। कृषी उत्पन्न बाजार समिती को भी करस्वरूप धनराशी देनी होती है अर्थात चारोतरफसे किसानों को लूटा जाता हैं। अनाज पैदाकरने वाले किसानों के हात में अपने अनाज को सही दामों मे बेचने का अधिकार नहीं होता। किसान दिन–प्रतिदिन गरिब बनते जा रहें है और व्यापारी दिन–दूनी रात चौगूनी प्रगती कर रहे हैं। मेहनत करनेवाला लाचार, परेशान, दुखी, और बेहाल है और उसके मेहनत पर जीने वाले मालामाल है। इस वास्तविकता को **'सुदामा पांडे धूनिल'** ने उघाडा है।

''खेतो में खडा किसान
मिट्टी हो गया है और
अनाज के ढेर पर बैठा बनिया
सोना बन गया है।''

जमीदार, साहुकार, महाजन, व्यापारी, प्रशासन सब किसानों के बलबूते आर्थिक लाभ पा रहे है और मेहनत, मजदुरी करनेवाला किसान भुखेपेट सोने को और अभावग्रस्त जीवन जीने को मजबूर है।

''भूखे रहकर आधा खाकर दिन ब दिन दुबराते है।
हट्ठी छेद रहा है, जाडा बसबस दॉत बजाते है।
दवा न कर पाते, रोगों की यम को पास बुलाते है
हरी इच्छा या राम भरोसे अपने को समझते है;
चॉदी तक क्या टहला तक की औ औंठी नदी गढाते है
परबी– तीज – त्यौहार नही तंगी के कारण भाते है।''

किसानों को गरिबी के कारण अभावग्रस्त जीवन जीना पडता हैं। कपास पैदा करनेवाले के पास ठिक से पहने के लिए कपडे नहीं है और अनाज पैदा करने वाले के पास भरपेट खाना नही हैं। यह विचित्र स्थिति है भारत की। किसानों की जर्जरता को व्यक्त करती **'शीला जी'** की **'आई का पत्र'** पामक कविता।

''जंगल बेच जमींदारो ने राह संजोई
रह जाती है ईधर दिन अधपिक रसोई
पुरखो की जायदाद करूँ क्या सरपर रखकर
रूपया कर्ज, उधार नहीं जब देता कोई
सोचा समझा खुद बहुत मन को समझाया
बेच रहा हूँ नीम द्वार की शीतल छाया
निगल गया खलिहान घर में दाना आया
ऐसी हालत में बोलो क्या खर्चे खाएँ।''

एक तरफ व्यापारीए राज नेता और प्रशासकिय अधिकारी किसानो को लूट रहे है तो दूसरी तरफ विकास के नाम पर उनकी जमीनो को व्यवस्था द्वारा छिना जा रहा है। सडक, बॉध, औद्योगिक वसाहत एवं शहरीकरण के कारण किसान अपनी धरती से खदेडाऔर

ADAT VYAPAR EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR
Dist.Nanded

लूटा जा रहा है। विकास के नामपर किसान मजदूर बन गया है। विकास के नाम पर होने वाली किसानों की दयनीय अवस्था को **'बादल'** नामक कविता में **'लखनपाल'** ने उघाडा है।

''जर्जर किसान मजदूर की चटपटाती हड्डियाँ
बेआवाज किलीन हो रही है।
विकास के लावे में''

किसानो की हालत खस्ता होती है। परंतू व्यवस्था, समाज उन्हे नजरअंदाज करता है। किसान कर्ज के कारण, फसल बर्बाद होने के कारन हताश हो अपनी जीवन यात्रा समाप्त करने को मजबूर है। क्या विडंबना है जो किसाना फसलपैदा करने के लिए अपना सबकूछ दॉव पर लगा देता हैं उसी किसान को भारत में आत्महत्या करनी पडती है। भारत में तो दिन–प्रति दिन किसानों की आमदनी घट रही हैं और आत्महत्या बढ रही है। भारतीय जनमानस की विकश्त मानसिकता को और किसानों की आत्महत्या की समस्या की वास्तविकता को उघाडती यह कविता

''रोज किसान मरते है
पर किसी को परवा नहीं
खेती बाडी बहुत कठिन हैं
कितना मुश्किल एक–एक दिन है
चुका न बॅक का ऋण है
जीना बस तारे गिन–गिन है
रोज किसान मर रहा है
दे रहा है अपनी जान
फिर भी हिदुस्तानी चिल्लाते अपना भारत देश महान''

''हम किसान देश को खिलाते है
पर खुद भूखे रह जाते है।
हम भारत वर्ष के किसान है।
हम कागज पे बहुत महान।''

'किसान बैठा है खेत की आड में' कविता में भी **'उमाशंकर'** ने किसान वर्ग की समस्या को उघाडा है।

''वह बूढा किसान
जिसके खेत में पड चुका है सूखा
जिसकी फसल को चुकी है
सुख कर खर – पतवार
जिसके जवान बेटे ने अपने पीछे
पत्नी और दो बेटियों को छोड दिया
लगा लिया है गले में फंदा।''

हिन्दी कवियोने किसानों की दयनीय अवस्था को, उनकी त्रासदी और पीडा को अपने काव्य में उघाडा है। किसानो की आत्महत्या वर्तमान में अत्यंत गंभीर रूप धारण कर चूकी है जो समाज के खोकले पण, निरर्थकता और असंवेदनशीलता को दर्शाता है। जगत का पालन हार मर रहा है और जनमानस अपने मस्ती में मस्त हैं। प्रशासकिय अधिकारी किसानो की लुट– खसोट में व्यस्त है और राजनेता उसे अपनी बोट बॅक तक सिमित रखने में माहिर है। किसान अत्यंत जर्जर अवस्था में जीवन व्यतित कर रहा है। इस वास्तविकता को हिंन्दी समकालीन कविता में उघाडा है।

❑❑❑

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded